# संपादकीय

प्रिय पाठको! आप सभी को *भारतीय आधुनिक शिक्षा* की अकादमिक संपादकीय समिति की ओर से नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ। इस नए वर्ष के साथ हमने 26 जनवरी, 2019 को देश का 70वाँ गणतंत्र दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया। भारत को एक गौरवशाली गणतंत्र राष्ट्र बनाने में स्वतंत्रता संग्राम के अनेक महान वीरों का असाधारण योगदान रहा है। इन वीरों की गाथाएँ हमें 'ज्ञान समाज' एवं देशभक्ति के लिए प्रेरित करती हैं। हमारे स्वाधीनता संग्राम के वीरों की गाथाओं को बयाँ करने वाली बातें, हमें इतिहास को पढ़ने, जानने व समझने के लिए प्रेरित करती हैं। इस प्रेरणा को विद्यालयी शिक्षा में पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से विद्यार्थियों तक पहुँचाने का प्रयास किया जाता है। इसी संदर्भ में, 'विद्यालयी पाठ्यपुस्तकों में भारत छोड़ो आंदोलन की विषय-वस्तु' लेख में, भारत के विभिन्न हिंदी भाषी राज्यों की पाठ्यपुस्तकों में भारत छोड़ो आंदोलन की विषय-वस्तु का विश्लेषणात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है।

विद्यार्थियों को सीखने-सिखाने में विद्यालय के वातावरण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसी पर आधारित शोध पत्र 'विद्यालयी वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता पर प्रभाव' दिया गया है। इस शोध अध्ययन में पाया गया कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में हिंदी व अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर शैक्षिक चिंता का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

भारतीय शैक्षिक व्यवस्था में विद्यार्थियों की बहुभाषिकता को अपनाकर समावेशी शिक्षा पर ज़ोर दिया जा रहा है। विद्यालयी शिक्षा में बहुभाषिकता के मार्ग में आने वाली चुनौतियों एवं संभावनाओं को विश्लेषित करने का प्रयास शोध पत्र 'शिक्षा में बहुभाषिकता — चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ' में किया गया है।

हमारे देश की साक्षारता दर में निरंतर वृद्धि हो रही है, लेकिन *ग्लोबल एजुकेशन मॉनिटरिंग रिपोर्ट, 2017–18* में यूनेस्को ने माना कि विश्व के 35 प्रतिशत निरक्षर लोग अब भी भारत में रहते हैं। 'प्रौढ़ निरक्षर अधिगमकर्ताओं की समस्याएँ एवं चुनौतियाँ' नामक लेख में एक प्रौढ़ निरक्षर अधिगमकर्ता 'केवट' की कहानी के आधार पर निरक्षर लोगों की समस्याओं को समझाने का प्रयास किया गया है।

दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा हेतु अधिगम का सार्वभौमिक अभिकल्प एक ऐसा अभिकल्प है जिसके माध्यम से शिक्षक अपने शिक्षण में विविधता उत्पन्न करता है और विद्यार्थियों को उनके द्वारा किए जा सकने वाली अधिगम गतिविधियों में से अपना विकल्प चुनने का अवसर प्रदान करता है। 'प्रभावी अधिगम का एकमेव विकल्प — अधिगम का सार्वभौमिक अभिकल्प' नामक लेख अधिगम के सार्वभौमिक अभिकल्प के संप्रत्यय, सिद्धांतों तथा उसकी सार्थकता पर प्रकाश डालता है। वहीं, 'दिव्यांगों के प्रति शैक्षिक दृष्टिकोण के आधार पर हिंदी फ़िल्मों का अध्ययन' यह बताता है कि हिंदी फ़िल्मों में अभिनय करने वाले कलाकारों के माध्यम से दिव्यांगों को समाज में कमज़ोर, दयनीय, लाचार, पराश्रित आदि

रूप में प्रस्तुत न करके साहसी, धैर्यवान, हिम्मत वाले और सकारात्मक दृष्टिकोण वाले व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

शिक्षा की गुणवत्ता के लिए शिक्षक का प्रभावशाली होना बहुत ज़रूरी है। शिक्षक की प्रभावशीलता को जानने-समझने का प्रयास 'शिक्षक की प्रभावशीलता—अवधारणा एवं रूपरेखा' नामक लेख में विश्लेषित एवं विस्तृत रूप में किया गया है। जबकि 'विद्यालयी शिक्षा में योग शिक्षा की उपादेयता' नामक लेख में योग को व्यक्तित्व विकास का मुख्य आधार बताया गया है। लेख में विद्यालय में योग शिक्षा को शामिल करने और उसे सुचारु रूप से क्रियान्वित करने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया गया है, जिससे विद्यार्थी स्वस्थ रहकर रचनात्मक कार्यों में बढ़-चढ़कर सहभागी बन सकें।

किसी भी व्यक्ति की जीवन शैली उसके सोचने-समझने, सामाजिक-पारिवारिक मूल्यों तथा आदर्शों एवं आदतों पर निर्भर करती है। 'ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी-शिक्षकों की जीवन शैली का अध्ययन' नामक शोध पत्र विद्यार्थी-शिक्षकों की जीवन शैली एवं शिक्षा पर प्रभाव को बताता है।

शिक्षा को देश के प्रत्येक बच्चे तक पहुँचाने तथा उसके जीवन स्तर में सुधार लाने के लिए सरकारी संस्थानों के साथ-साथ गैर-सरकारी शिक्षण संस्थानों की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जिनमें से एक गैर-सरकारी शिक्षण संस्थान द्वारा शिक्षा में योगदान व बच्चों के उत्थान के लिए किए गए कार्यों पर आधारित शोध पत्र 'गैर-सरकारी शिक्षण संस्थानों का शिक्षा के विकास में योगदान' दिया गया है।

शिक्षा का स्तर चाहे विद्यालयी हो या विश्वविद्यालयी, इसकी गुणवत्ता तथा क्रियान्वयन की ज़िम्मेदारी केंद्र व राज्य सरकारों की होती है। इसी परिप्रेक्ष्य में भौगोलिक दृष्टि से पहाड़ी राज्य उत्तराखण्ड में, उच्च शिक्षा के क्षेत्र में किए गए प्रयासों तथा चुनौतियों पर आधारित लेख 'उत्तराखण्ड में उच्च शिक्षा की स्थिति—समस्याएँ एवं समाधान' दिया गया है।

आप सभी की प्रतिक्रियाओं की हमें सदैव प्रतीक्षा रहती है। आप हमें लिखें कि यह अंक आपको कैसा लगा। साथ ही, आशा करते हैं कि आप हमें अपने मौलिक तथा प्रभावी लेख, शोध पत्र, आलोचनात्मक समीक्षाएँ, श्रेष्ठ अभ्यास, पुस्तक समीक्षाएँ, नवाचार एवं प्रयोग, क्षेत्र अनुभव आदि प्रकाशन हेतु आगे दिए गए पते पर भेजेंगे।

*अकादमिक संपादकीय समिति*